सं ब्रो. वि.एफ ब्डी ब/20-87/38785.—चूंकि हरियाणा के राज्याल को राजे है कि मैं एस जै. निर्टिंग एण्ड फिनिशिंग मिल्ज, प्राठ लिंब, प्लाट नंब 137, मथुरा रोड़, फरीदाबाद, के श्रीमिक श्री राजीव कुमार गुप्ता, पुत श्री हरी स्वरूप गृप्ता मार्फत हिन्द मजदूर सभा, 29, शाही चोक, फरीदाबाद, तथा प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियांणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7-क के अधीन गठित औद्योगिक अधिकरण, हरियागा, फरोदाबाद को नीचे विकिर्देश्य मामका जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवादयस्त मामला/मामले हैं अथवा विकाद से भुतंगत या तम्बन्धित मामला/मामले हैं न्याय निर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री राजीव कुमार की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राइत का हकदार है? सं. ग्रो. वि/एफ. डी./208-87/38792--च्रि हरियागा के राज्यात की राय है कि मैं० लीमांड ट गारमेन्टस प्रा०लि०., 12/6, मथुरा रोड, फरीदाबाद, के श्रीमक रेखा रानी, मार्फत श्री कैदार नाथ, लाल क्वाटर नं० 196, 13/3, सूभाष नगर, डा० ग्रमर नगर, फरीदावाद तथा प्रवन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीबोगिक विवाद है;

भौर चुंकि हरियाणा के राज्यपात इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रन, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रीधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) हिरा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हिरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त ग्रीधिनियम की धारा 7क के ग्रीधीन गठित ग्रौद्योगिक ग्रीधिकरण, हिरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला हैं श्रथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला हैं श्रायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते है:—

क्या रेखा रागी की मेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत की हकदार है ?

सं. श्रो. वि./एसडी/202-87/38799.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं गुरु प्रसाद इन्जिनियरिंग वर्कस, 15/3, नयुरा रोड, करीह(व'द के श्रीक श्री दुर्ग बहादुर, यूर श्री भीग बहादुर नार्का कारा हन्नी श्रीका हाते, में को 176, वार्ड वंश्वी, शास्त्री कतोनी, करीहाबाद तथा प्रवत्त्रकों के मध्य इतर्ने इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, ग्रब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिविनियम, 1947 की धारा 10 को उप धारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शिक्षियों का प्रयोग करते हुए हरियागा के राज्यवाल इसके द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7क के अधीन गिठित श्रीद्योगिक ग्रिविकरम, हरियागा, फरोदाबाद, को नीचे वितिदिश्य मामता जो कि उक्त प्रवत्यकों तथा श्रीमकों के बीच या नो विवाद प्रपत्त मानता हैं न्याय निर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं:--

क्या श्री दुर्गा बहादुर को सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत क. हकदार है ?

दिनांक 6 श्रक्तूबर, 1987

सं ग्रो वि /गुड़गांव/20-87/39602 — चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं विरेन्द्रा ग्राम, गांव सिकन्दरपुर, महरातो रोड, गुड़गांव के प्रीक्ष भी भरत ठाकुर, पुत्र श्री पारस ठाकुर मार्फत श्री श्रद्धानन्द, महा सचिव, गुड़गांव कि फैक्ट्री वर्करज यूनियन (एटक ग्राफिस), गुड़गांव तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रौद्योगिक विवाद है; श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेत निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, श्रीचोगिक विवाद अधिनियम, 1947, का धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-68-15253, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/112-45, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादशस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेत् निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादशस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा अस्वन्धत मामला है :---

क्या श्री भरत ठाकुर की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?
सं शों वि /गुड़गांव / 192-87/39609.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं विरेन्द्रा ग्राम, सिकन्दरपुर,
महरोली रोड, गुड़गांव के श्रीमक श्री जगन्नाथ सिंह, पुल श्री छोटे लाल, मार्फत श्री श्रद्धानन्द, महा सचिव, गुड़गांव फैक्ट्री
वकरस यूनियन (एटक ग्राफिस), गुड़गांव तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक
विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, भौबोगित विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके हारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/112-45, दिनांक 7 फरवरी, 1958, हारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिन के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री जगन्नाथ सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत कं हकदार है ?

सं० स्रो० वि०/गुड़गांव/189-87/39616-चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै० विरेन्द्रा ग्राम, गांव सिकन्दरपुर, मेहरोली रोड, गुड़गांव के श्रमिक श्री ग्रब्धल जनी, पुत्र श्री ग्रामीस दीन मार्फत श्री श्रद्धानन्द, महा सचिव, गुड़गांव पैंट्ट्री वर्करण भूनियन (एटक श्राफिस), गुड़गांव तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामले में कोई सौद्योगिक विवाद है

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझे हैं;

इसलिये, ग्रब, श्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 5415-3-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/112-45, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उस से सुसंगत या उससे सम्बंदिवत नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :--

क्या श्री श्रब्दुल जनी की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं० मो०वि०/गुड़गांव/193-87/39623.—चूंकि हिरयाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० विश्न्द्रा ग्राम, गांव सिकन्दरपुर, मेहरोली रोड़, गुड़गांव के श्रमिक श्री मुफिजुदीन, पुत्र श्री नसीखदीन, मार्फत श्री श्रद्धानन्द, महा सचिव, गुड़गांव -∳क्रैक्ट्री वर्करज यूनियन (इटक ग्राफिस), गुड़गांव तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई मौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है;

इसलिये, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं 5415-3-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए श्रिधिसूचना सं 11495-जी-श्रम-57/112-45, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतू निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

े क्या श्री मुिफ बुदीन की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?